भूगोल B.A. II year

भूमि उपयोग का अर्थ

पृथ्वी पर मानव विभिन्न क्रिया कलाप करता है इन क्रिया कलापो हेतु मानव द्वारा किये गए धरातल के उपयोग को भूमि उपयोग की संज्ञा दी जाती है। इसे भौगोलिक अध्ययनो मे कभी भूमि प्रयोग तो कही भूमि संसाधन उपयोग कहा गया है। भूमि का प्रयोग कृषि कार्यो वनो उद्योगो आवास क्षेत्रो सड़क पार्क प्रशासनिक व व्यापारिक संस्थाओ तथा विभिन्न नगरीय एवं ग्रामीण कार्यो मे होता है। कृषि क्षेत्रो मे भूमि के विविध प्रयोगो का अध्ययन कृषि भूमि उपयोग के रूप मे किया जाता है जैसे - अकृषित भूमि कृष्य बंजर भूमि कृषित भूमि सिंचित भूमि असिंचित भूमि एक फसली भूमि दो फसली भूमि बहुस्थीय भूमि आदि इसके अन्तर्गत कृषि भूमि क्षमता एवं उत्पादकता का भी अध्ययन किया जाता है।

कृषि भूमि क्षमता ज्ञात करते समय भूमि उपयोग प्रति रूप के विभिन्न पक्षो के आधार माना जाता है। जो भूमि को विभिन्न रूपो मे प्रभावित करते है। भूमि उपयोग क्षमता एवं सस्य गहनता को समानवती माना है। परन्तु वास्तव मे भूमि उपयोग क्षमता एवं सस्य गहनता दोनो अलग अलग पहलू है।

वॉन थ्यूनेन का सिद्धान्त —

कृषि के लिए किसी क्षेत्र विशेष मे उत्पन्न होने वाली विभिन्न सम्भावित फसलो मे कौन सी फसल उगाई जाय इसका निर्णय करना पड़ता है।

इसके निर्णय मे कृषि के स्थानीयकरण का सिद्धान्त सहायक होता है।
कृषि स्थानीयकरण का सिद्धान्त जर्मनी के प्रख्यात विद्वान वान थ्यूनेन ने (1926) मे प्रतिपादित कियाया इस सिद्धान्त से कृषि के स्थानीयकरण की विशद व्याख्या होती है। तथा नगर कि स्थिति पर भी प्रकाश पड़ता है।
कृषि स्थानीयकरण सिद्धान्त का मौलिक आधार दो क्षेत्रो की तुलनात्मक लाभ का सिद्धान्त है।

13/ [illegible]

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया